**कवि-परिचय :**

**नाम** : सतीश कुमार मिश्र

**जनम-तिथि** : 10.2.1947

**मिरतु** : 3.10.2006

**जनम-अस्थान** : सवजपुरा, पितवाँस, पटना।

**निवास** : कुसुमपुरम कॉलोनी, परसा बाजार, पटना

ई मगही आन्दोलन के अगुआ हलन। मगही के जादेतर माँग पूरा करावे के सरेय इनके देवल जा सकऽ हे। 'मगही समाचार' अखबार निकाल के ई मगही भासा के आम जनता से जोड़े में महत्वपूर्ण भूमिका निबाहलन हल। इनकर छप्पल किताब हे :—

(1) हिलकोरा 1972 (2) टूसा 1976 (3) दुब्भी 2000 (मगही कविता संगरह)

(4) तऽ का हम कुँआरे रहें (हिन्दी नाटक संगरह)

(5) हिन्दी के हजार साल (हिन्दी नाटक)

(6) बुद्धं शरणं गच्छामि (हिन्दी नाटक)

ई टेलीविजन, फीचर फिल्म ला गीत, पटकथा, रेडियो धारावाहिक भी लिखलन आउ परसारन भी भेल।

'जिन्दगी अतुकान्त कविता' में सतीश कुमार मिश्र आम अदमी के परेसानी के चित्रित कैलन हे। कविता में आधुनिक आउ नूतन बिम्ब के परयोग काबिले-तारीफ हे। कवि खाली मउसम न बलुक जमाना के अघात से भी घायल हथ। गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी के चलते अदमी के जिनगी से गीत, लय आउ राग अलोप हो गेल हे।

## जिन्दगी अतुकान्त कविता

**साज, सुर सब छन्द भूलल, राग छेंड़ूँ मीत कइसन।**
**जिन्दगी अतुकान्त कविता, पढ़ रहल ही गीत जइसन।।**

चाह करुआ तेल भेले,
आस के रेपसिड पिअऽ ही।
नून नीअन चैन भागित,
साँस पर पेबन सिअऽ ही।।
हार के सब दाव अप्पन, मुसकुरा ही जीत अइसन।
जिन्दगी अतुकान्त कविता, पढ़ रहल ही गीत जइसन।।

सूर्य कुन्ती में अभुर के
फुर्र आवे, फुर्र भागे।
दलदलाइत कोई अँजुरी
घाम अब केकरा से माँगे।।
देख के बोरसी हम्मर, पूस के मुँह तीत अइसन।
जिन्दगी अतुकान्त कविता, पढ़ रहल ही गीत जइसन।।

अब भौंरा परशुराम के
जाँघ में घुँस फुरफुरा हे।
आँख के पुतरी हम्मर
राग दीपक सुरसुरा हे।।
कृष्ण घायल, पार्थ मुसकित हाय, हो गेल रीत कइसन।
जिन्दगी अतुकान्त कविता, पढ़ रहल ही गीत जइसन।।

दोष देऊँ गाछ हम भी,
जेठ के हाही कहऽ हे।
धाँह पर भादो बनेला
अब बेअक्खर मन चहऽ हे।।
खून टपकित ठेंस ऊपर हम ही तइयो सीत अइसन।
जिन्दगी अतुकान्त कविता, पढ़ रहल ही गीत जइसन।।

## अभ्यास-प्रस्न

**मौखिक :**

1. कवि गीत जइसन का पढ़ रहल हे?
2. कवि कउन बात पर मुस्कुरा रहल हे?
3. पूस के मुँह कइसन बतावल गेल हे?
4. कृष्ण घायल काहे हथ?
5. खून काहे टपकित हे?

**लिखित :**

1. जिन्दगी के अतुकान्त कविता काहे कहल गेल हे?
2. परसुराम के जाँघ में भौरा के घुँस जाए के परिनाम का भेल?
3. 'देख के बोरसी हम्मर पूस के मुँह तीत अइसन' के भाव बतलावऽ।
4. कृष्ण के घायल होला पर पार्थ के मुसकित काहे कहल गेल हे?
5. 'धाँह पर भादो' के अरथ समझावऽ।
6. नीचे लिखल पद्यांस के व्याख्या करऽ—

   (क) ''खून टपकित ठेंस ऊपर हम ही तइयो सीत अइसन।
   जिन्दगी अतुकान्त कविता, पढ़ रहल ही गीत जइसन।''

   (ख) ''चाह करुआ तेल भेले,
   आस के रेपसिड पिअऽ ही।
   नून नीअन चैन भागित,
   साँस पर पेबन सिअऽ ही।

7. नीचे लिखल के भाव बतावऽ :

   (क) चाह करुआ तेल भेले

   (ख) साँस पर पेबंद सिअऽ ही

   (ग) दलदलाइत कोई अँजुरी घाम अब केकरा से माँगे

(घ) राग दीपक सुरसुरा हे

(ङ) दोम देऊँ गाछ हम भी

**भासा–अध्ययन**

1. छन्द कै तरह के होवऽ हे?
2. नीचे लिखल मुहावरा के अरथ लिख के वाक्य में परयोग करऽ :

   नून नियन चैन भागित, पूस के मुँह

   तीत, बेयक्खर मन, आँख के पुतरी
3. नीचे लिखल सबद से वाक्य बनावऽ :

   छन्द, रेपसिड, दलदलाइत, भौंरा, धाँह
4. कविता के भाव आउ सिल्प सौन्दर्य बतावऽ।
5. नीचे लिखल के पर्यायवाची सबद बतावऽ :

   भौंरा, खून, कृष्ण, पार्थ, गाछ, दीपक, सूर्य
6. अनुप्रास अलंकार कउन–कउन पंक्ति में आयल हे?
7. लच्छना आउ व्यंजना के एक–एक उदाहरन कविता से चुन के लिखऽ।

**योग्यता-विस्तार :**

1. कृष्ण, पार्थ से सम्बन्धित कोई प्रसंग सुनावऽ। ऊ प्रसंग कविता में आयल प्रसंग से अलग होवे के चाही।
2. हिन्दी में अतुकांत कविता के सुरुआत के कैलन?
3. जिन्दगी दुख से हट के सुख के ओर कइसे जा सकऽ हे, एकरा पर कलास में परिचरचा आयोजित करऽ।

**सब्दार्थ :**

| | | |
|---|---|---|
| छन्द | : | कविता के परकार |
| अतुकान्त | : | एक तरह के कविता जेकरा में तुक न होवऽ हे। |

| | | |
|---|---|---|
| रेपसीड | : | एक तरह के तेल के बीया |
| चैन | : | सान्ति |
| पेबन | : | फट्टल कपड़ा पर एगो दोसरा कपड़ा साटल |
| अँजुरी | : | दुन्नो हाथ के मिला के जे रूप बनऽ हे |
| बोरसी | : | जाड़ा के दिन में आग तापेला एगो मट्टी के बरतन |
| पुतरी | : | आँख के बिचला करिया भाग |

•